

रॉबर्ट वानॉय, बाइबिल भविष्यवाणी की नींव, व्याख्यान 16

भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य, ओबद्याह एक्स का परिचय।

भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य

पिछले सप्ताह मैंने आपको रोमन अंक X दिया था। मुझे आशा है कि आप उसे पढ़ने में सक्षम होंगे क्योंकि उसे सौंपने का मेरा इरादा उस पर गौर करने में समय बचाने का था। मुझे बस इसके बारे में बताने दीजिए और फिर यदि आपके कोई प्रश्न हों तो शायद हम इस पर आगे चर्चा कर सकते हैं। लेकिन मैं उस हैंडआउट को पूरा नहीं पढ़ूंगा बल्कि कुछ चीजों पर प्रकाश डालूंगा।

उ. क्या बाइबिल की भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य है?

ए. है, “क्या बाइबिल की भविष्यवाणी का क्षमाप्रार्थी मूल्य है? प्रारंभिक विचार।” ऐतिहासिक रूप से, ऐसे कई लोग हैं जो महसूस करते हैं कि पूर्वानुमानित भविष्यवाणी में क्षमाप्रार्थी मूल्य है, और इसलिए यह एक क्षमाप्रार्थी उपकरण है जिसका उपयोग बाइबिल की सत्यता और पवित्रशास्त्र के माध्यम से बोले गए ईश्वर के अस्तित्व के लिए प्रभावी ढंग से बहस करने के लिए किया जा सकता है। क्योंकि आप सदियों पहले दी गई भविष्यवाणियों को देख सकते हैं, और बहुत बाद के समय में पूर्ति देख सकते हैं, और यह पवित्रशास्त्र और भगवान के अस्तित्व की सत्यता के लिए बहस करने के लिए एक अच्छा क्षमाप्रार्थी उपकरण प्रदान करता है।

1. एल्डर्स: थोड़ा मूल्य

तो मेरा पहला कथन यह है कि उस प्रश्न का सकारात्मक उत्तर देने का अच्छा कारण है। क्या क्षमाप्रार्थना का कोई मूल्य है? मुझे लगता है वहाँ है। लेकिन हमारे बीच कुछ ईसाई धर्म प्रचारक भी हैं जो नकारात्मक उत्तर देंगे। अब, जब आप इंजील दुनिया से बाहर निकलते हैं तो बहुत सारे आलोचनात्मक विद्वान होते हैं जो कहते हैं कि इसका कोई मूल्य नहीं है। उदाहरण के लिए मैं एक उच्च विद्वान जीसी आल्डर्स का उपयोग करता हूँ, जो

एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय में पुराने नियम के प्रोफेसर थे, जहां मैंने अपना काम किया था। उन्होंने जो खंड लिखा, आप उसे उसके नीचे दूसरे पैराग्राफ में देख सकते हैं जिसे *इज़राइल में झूठा पैगंबर कहा जाता है*। उन्होंने उस पुस्तक में क्षमाप्रार्थी मूल्य के इस मुद्दे पर चर्चा की है। वह कुछ सकारात्मक कारकों को नोट करता है जैसे कि भविष्यवाणी की पूर्ति का सकारात्मक तरीके से उपयोग और उन सकारात्मक कारकों को आपकी रूपरेखा के पृष्ठ 1 पर 1-5 क्रमांकित किया गया है। मैं उन सभी की समीक्षा नहीं करूंगा, लेकिन आप पृष्ठ 2 पर जाएं, एल्डर्स को पवित्रशास्त्र की सच्चाई को प्रदर्शित करने के मानदंड के रूप में भविष्यवाणियों की पूर्ति की अपील करने पर कुछ गंभीर आपत्तियां हैं। उनके विचार में, जब आप उन आपत्तियों को देखते हैं, तो आपत्तियाँ दर्शाती हैं कि तर्क के लिए क्षमाप्रार्थी मूल्य उतना महान नहीं है जितना आप शुरू में सोचने के इच्छुक हो सकते हैं। फिर उनकी आपत्तियों की एक सूची इस प्रकार है। उनमें से तीन हैं।

एक। पूर्ति पर विवाद

पहला है "पूर्ति पर विवाद।" उदाहरण के लिए उन्होंने अपनी पुस्तक *द प्रोफेट्स एंड प्रोफेसी इन इज़राइल में अब्राहम क्यूनेन को उद्धृत किया है*, और यह अधूरी भविष्यवाणियों की एक सूची देता है। उनका कहना है कि क्यूनेन ने क्षमाप्रार्थी तर्क को पूरी न हुई भविष्यवाणियों के आधार पर बदल दिया है और पूरी हुई भविष्यवाणियों के विरुद्ध तर्क दिया है।

बी। डेटिंग और व्यक्तिपरक कारकों पर विवाद

दूसरे, "भविष्यवाणी और उसकी पूर्ति के बीच संबंधों का आकलन करने में डेटिंग और व्यक्तिपरक कारकों पर विवाद।" दूसरे शब्दों में, आप डैनियल और यशायाह के दूसरे भाग के साथ विवादों में पड़ जाते हैं। क्या डैनियल उस समय का है जब वह ऐसा होने का दावा करता है या वह कोई गुमनाम व्यक्ति है जो 165 ईसा पूर्व के आसपास लिख रहा है जब एंटीओकस एपिफेन्स पहले ही दृश्य में दिखाई दे चुका था?

वह डेविडसन नाम के एक व्यक्ति को उद्धृत करते हैं जो कहता है कि यदि पूर्ति के तर्क का वास्तव में साक्षात्मक मूल्य होगा तो उसे निम्नलिखित शर्तों का पालन करना होगा, "सबसे पहले ज्ञात उद्घोषणा घटना से पहले होनी चाहिए। दूसरे, इसकी स्पष्ट एवं स्पष्ट पूर्ति होनी चाहिए। अंत में, घटना की प्रकृति, जब इसकी भविष्यवाणी की गई थी, तो यह मानवीय दृष्टिकोण से दूर थी, और ऐसी थी कि इसे तर्क के किसी भी अनुमानित प्रयास से नहीं देखा जा सकता था, या संभाव्यताया अनुभव से प्राप्त गणना के सिद्धांतों पर निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता था।" अब उस कथन में वे सभी इटैलिकाइज़्ड शब्द हैं जिन्हें एल्डर्स व्यक्तिपरक निर्णय कहेंगे। ज्ञात उद्घोषणा, घटना की प्रकृति जैसी चीजें तर्क के प्रयास से नहीं देखी जा सकतीं, कटौती द्वारा देखी या उत्पन्न नहीं की जा सकतीं। फिर आल्डर्स का कहना है कि उन व्यक्तिपरक मूल्य निर्णयों के संबंध में, यह स्पष्ट है कि लोग अपने निष्कर्षों में भिन्न होंगे ताकि वास्तविक ठोस सत्य कभी नहीं मिल सके। लेकिन फिर आप देखते हैं कि वह क्या करता है, वह उसे पलट देता है और कहता है कि उलटा भी सच है, ताकि भविष्यवाणी की दैवीय उत्पत्ति के खिलाफ कोई ठोस सबूत उसके गैर-पूर्ति द्वारा नहीं बनाया जा सके जैसा कि केयून प्रयास करता है। दूसरे शब्दों में, पूरा व्यवसाय गिर सकता है क्योंकि यह व्यक्तिपरक रूप से निर्धारित होता है। तो यह उनकी दूसरी आपत्ति है।

सी। प्रतीकात्मक भाषा क्षमाप्रार्थी मूल्य को खत्म कर देती है

तीसरा है "प्रतीकात्मक भाषा क्षमाप्रार्थना के मूल्य को खत्म कर देती है।" मैं शुरू से ही कह सकता हूँ कि एल्डर्स एक सहस्त्राब्दिवादी हैं। वह मसीह के लिए पुराने नियम की राज्य भविष्यवाणियों को आध्यात्मिक या आलंकारिक अर्थ में लेने और उन्हें चर्च पर लागू करने के लिए इच्छुक है। प्रतीकात्मक और क्षमाप्रार्थी मूल्य के तहत उस अनुच्छेद में कई पंक्तियों में वह कहते हैं कि यह क्षमाप्रार्थी उपकरण के रूप में भविष्यवाणी और पूर्ति की अपील करने के लिए एक विशेष कठिनाई पैदा करता है। एल्डर्स का तर्क है कि कीथ जैसे लोगों का शाब्दिक दृष्टिकोण कई भविष्यवाणियों की प्रतीकात्मक प्रकृति के साथ न्याय नहीं करता है। एल्डर्स का विचार है कि नई वाचा की आध्यात्मिक वास्तविकताओं को इंगित

करने के लिए भविष्यवाणियाँ अक्सर यरूशलेम, सियोन और मंदिर की बात करती हैं।

यशायाह 2 का अंश लें, "हर कोई प्रभु के पर्वत पर आएगा, यह ऊंचा और ऊंचा होगा।" यह चर्च का आगमन है! असीरिया और बेबीलोन पापपूर्ण और विनाशकारी दिशाओं के प्रतीक हैं। वह बाबुलों की शृंखला के बारे में बात नहीं कर रहा है, बल्कि आध्यात्मिक अर्थ में, परमेश्वर के राज्य के दुश्मनों के बारे में बात कर रहा है। वह आगे कहते हैं कि वह यह नहीं देख सकते कि कैसे, इस पर ध्यान दें, "जो कीथ की तरह व्याख्या की अधिक शाब्दिक पद्धति अपनाता है, वह खुद को सबसे छोटी त्रुटि से मुक्त रख सकता है।"

क्या आप जानते हैं कि चिलीस्ट त्रुटि क्या है? चिलियास्ट एक हजार है! यह पूर्वसहस्राब्दी युगांतशास्त्र है, जहां आप इन भविष्यवाणियों को लेते हैं जो पृथ्वी पर ईसा मसीह के भविष्य के हजार साल के शासन के बारे में बात करते हैं जिसमें तलवारों को पीटकर हल के फाल बनाए जाएंगे। तो आप देखिए कि वह क्या कह रहा है, यदि आप इसे शाब्दिक रूप से लेते हुए व्याख्या कर रहे हैं, तो आप एक प्रीमिलेनियलिस्ट बनने जा रहे हैं। एल्डर्स जैसे किसी व्यक्ति के लिए यह अकल्पनीय है। उनका कहना है कि यदि बाबुल के संबंध में भविष्यवाणियाँ वस्तुतः विवरण तक पूरी होतीं, तो कोई भी यरूशलेम और इज़राइल के संबंध में भविष्यवाणियों की पूर्ति के लिए एक अलग तरीके का प्रस्ताव नहीं कर सकता। फिर किसी को इन भविष्यवाणियों की विस्तृत शाब्दिक पूर्ति की भी उम्मीद करनी चाहिए। एल्डर्स के अनुसार, इस प्रकार यह स्पष्ट है कि भविष्यवाणियों की शाब्दिक पूर्ति की अपील क्षमाप्रार्थी को एक बड़ी कठिनाई में उलझा देती है।

लेकिन, और यहीं सभी अच्छे बिंदु हैं, यदि कोई आध्यात्मिक पूर्ति के पक्ष में व्याख्या की शाब्दिक पद्धति को छोड़ देता है तो वह अपना हथियार खो देता है। क्यों? ईसाई धर्म का विरोध करने वालों को आध्यात्मिक पूर्ति समझाना कठिन है। दूसरे शब्दों में, यदि आप भविष्यवाणी और पूर्ति को क्षमाप्रार्थी उपकरण के रूप में उपयोग करने जा रहे हैं और आप इसे प्रतीकात्मक रूप से व्याख्या करने जा रहे हैं, तो यह क्षमाप्रार्थी तर्क की शक्ति को कम कर देता है।

डी। अवलोकन: अमिलिनियलिस्ट्स-पूर्वानुमानात्मक क्षमाप्रार्थी, प्रीमिलिनियलिस्ट्स - साक्ष्यवादी

मुझे याद है कि मैंने कुछ साल पहले इसे पढ़ा था और मुझे कुछ सूझा था लेकिन मैंने इसे पहले कभी एक साथ नहीं रखा था। मुझे लगता है कि यह सच है, और वह यह है: यदि आप इंजील व्याख्याकारों को देखें, तो आप पाएंगे कि सहस्राब्दीवादी व्याख्याकार आम तौर पर क्षमाप्रार्थी में पूर्वकल्पनावादी होते हैं। सहस्राब्दीवादी अधिक प्रतीकात्मक और आलंकारिक रूप से व्याख्या करते हैं, और वे आम तौर पर बाइबिल की सत्यता के प्रमाण के रूप में भविष्यवाणी और पूर्ति का उपयोग नहीं करते हैं। जबकि प्रीमिलेनियलिस्ट, जो अधिक शाब्दिक व्याख्या करते हैं, आम तौर पर क्षमाप्रार्थी नहीं होते हैं। वे आम तौर पर साक्ष्यवादी होते हैं, और यह पवित्रशास्त्र की सत्यता के प्रमाणों में से एक है। इसलिए, आप शायद यह न सोचें कि क्षमाप्रार्थी प्रणालियों और युगांतशास्त्रीय प्रणालियों के बीच कोई संबंध है, लेकिन मुझे लगता है कि जब आप वास्तव में इसे प्रतिबिंबित करते हैं तो यह काफी सख्त होता है। सामान्य तौर पर, जो लोग एमिल एनियलिस्ट हैं, वे भी क्षमाप्रार्थी पूर्वकल्पनावादी होने जा रहे हैं और जो सामान्य तौर पर प्रीमिलेनियलिस्ट हैं, वे क्षमाप्रार्थी में साक्ष्यवादी होने जा रहे हैं। मुझे यकीन है कि अपवाद हैं, लेकिन सामान्य तौर पर यह निश्चित रूप से एल्डर्स के साथ फिट बैठता है, और वह इस पर ध्यान देता है।

इ। एल्डर्स निष्कर्ष

इस अगले कथन पर ध्यान दें. एल्डर्स ने तब निष्कर्ष निकाला कि यह भविष्यवाणी की पूर्ति नहीं है जो धर्मग्रंथ के दैवीय सत्य के प्रति दृढ़ विश्वास लाती है, बल्कि इसका उल्टा है - धर्मग्रंथ के दैवीय सत्य के प्रति विश्वास भविष्यवाणी की पूर्ति में विश्वास की ओर ले जाता है। और निःसंदेह वहाँ भी, युगांतशास्त्रीय दृष्टिकोण क्षमाप्रार्थी दृष्टिकोण के साथ काफी कड़ा है। उनका तर्क है कि ईश्वर के प्रकट सत्य की निश्चितता किसी बाहरी साक्ष्य में नहीं, बल्कि स्वयं में निहित है। ईश्वर मनुष्य को विश्वास करने के लिए बाध्य नहीं करता। यह भी उनकी इच्छा है कि भविष्यवाणी की पूर्ति सभी संदेहों से परे कुछ निर्विवाद नहीं होनी चाहिए, बल्कि

यह केवल इतनी निश्चितता प्रदान करनी चाहिए कि आस्तिक इसमें अपने विश्वास के लिए समर्थन पा सके। दूसरे शब्दों में, कोई व्यक्ति जो विश्वास में आ गया है और विश्वास करता है, और फिर भविष्यवाणियों को देखता है, वह अपने विश्वास के लिए समर्थन पा सकता है, लेकिन जो व्यक्ति विश्वास में नहीं आया है वह अब देख सकता है और उनमें बहुत कम या कोई मूल्य नहीं पा सकता है।

उनका कहना है कि जो व्यक्ति बाइबल को ईश्वर के वचन के रूप में पहचानता है, उसके लिए भविष्यवाणियों की पूर्ति दिन के समान स्पष्ट है और इसलिए यह उसके विश्वास की पुष्टि करने का काम कर सकता है। यह निश्चित रूप से वैध है। मेरा पसंदीदा प्रश्न यह है: क्या इसमें अविश्वासी के लिए भी कोई भूमिका है, उसे खुला होने का स्थान दिलाने, बाइबल सुनने के लिए? इसलिए उनका कहना है कि भविष्यवाणी की पूर्ति द्वितीयक अर्थ में मूल्य से रहित नहीं है, लेकिन जो व्यक्ति धर्मग्रंथ में विश्वास नहीं करता, उसके लिए यह इतनी स्पष्टता से नहीं बोलता कि वह धर्मग्रंथ की दिव्य उत्पत्ति को देखने के लिए मजबूर हो जाए।

एल्डर्स का कहना है कि यह उस पर निर्भर करता है जिसे वह आंतरिक सिद्धांत कहते हैं, जो उनकी स्थिति के केंद्र में है - कोई व्यक्ति पवित्रशास्त्र को भगवान का शब्द मानता है या कोई यह नहीं मानता है कि पवित्रशास्त्र भगवान का शब्द है। यह विश्वास पवित्र आत्मा के कार्य का फल है। ईसाई सत्य की निश्चितता का अंतिम आधार पवित्र आत्मा की गवाही में खोजा जाना है।

इसलिए उनका निष्कर्ष यह है कि क्षमाप्रार्थी के लिए बेहतर है कि वह स्वयं को पवित्रशास्त्र की सच्चाई के लिए वस्तुनिष्ठ साक्ष्य की तलाश में शामिल न करे, बल्कि उसे इस व्यक्तिपरक दृष्टिकोण की ओर पीछे हटना चाहिए और फिर गैर-ईसाई विश्व दृष्टिकोण को तर्कों के बावजूद प्रदर्शित करना चाहिए। इसके विपरीत, साक्ष्य के किसी भी आधार पर खुद को सही नहीं ठहराया जा सकता है, और ईसाई स्थिति के समान ही व्यक्तिपरक में इसका अपना शुरुआती बिंदु है। तो, "भविष्यवाणी के क्षमाप्रार्थी मूल्य" पर उनका विचार यही है। उनके विचार में, आप या तो बाइबिल और धर्मग्रंथ पर विश्वास करते हैं या नहीं! और चाहे आप विश्वास करें या न करें कि बाइबल परमेश्वर का वचन है, यह पवित्र आत्मा का कार्य है!

यह व्यक्तिपरक है. लेकिन फिर आप इसे पलट देते हैं और जो लोग आस्तिक नहीं हैं उन्हें बताते हैं कि उनकी स्थिति भी व्यक्तिपरक है। अब मुझे लगता है कि इसमें आपको क्षमाप्रार्थना के पूर्वकल्पित और साक्ष्यात्मक दृष्टिकोण के बीच अंतर का सामना करना पड़ता है जो एक और बड़ा विषय है।

4. मैकेन की टिप्पणियाँ मेरे पास "ईसाई धर्म और संस्कृति" प्रकाशन से जेजी मैकेन का एक पैराग्राफ है। विवरण आपकी ग्रंथ सूची में पाए जाते हैं। आप मैकेन के पृष्ठ के नीचे रेखांकित कथन पर ध्यान दें। वह कहते हैं, "यह मान लेना एक बड़ी गलती होगी कि सभी मनुष्य सुसमाचार प्राप्त करने के लिए समान रूप से तैयार हैं। यह सच है कि निर्णायक मुद्दा ईश्वर की पुनर्योजी शक्ति है। यह पवित्र आत्मा का कार्य है जो लोगों को मसीह के ज्ञान में लाता है। वह कहते हैं, "यह तैयारी की सभी कमी को दूर कर सकता है, और इसकी अनुपस्थिति, सबसे अच्छी तैयारी को भी बेकार बना देती है।" और यहाँ रेखांकित कथन है, "लेकिन, वास्तव में, ईश्वर आमतौर पर मानव मन की कुछ पूर्व स्थितियों के संबंध में उस शक्ति का प्रयोग करता है, और जहाँ तक हम कर सकते हैं, ईश्वर की मदद से इसे बनाना हमारा काम होना चाहिए।" सुसमाचार के स्वागत के लिए वे अनुकूल परिस्थितियाँ... मेरा मतलब यह नहीं है कि बौद्धिक आपत्तियों को दूर करने से कोई व्यक्ति ईसाई बन जाएगा। नहीं, केवल तर्क-वितर्क से रूपांतरण कभी नहीं होता। हृदय परिवर्तन भी जरूरी है. और यह केवल ईश्वर की शक्ति के तत्काल प्रयोग से ही संभव हो सकता है।

लेकिन अगले कथन पर ध्यान दें, "लेकिन चूंकि बौद्धिक श्रम अपर्याप्त है, इसलिए इसका पालन नहीं होता है, जैसा कि अक्सर माना जाता है, कि यह अनावश्यक है। यह सच है कि भगवान अपनी पुनर्योजी शक्ति के तत्काल प्रयोग से सभी बौद्धिक बाधाओं को दूर कर सकते हैं। कभी - कभी वह करता है। लेकिन वह ऐसा बहुत कम ही करता है. आमतौर पर वह मानव मन की कुछ स्थितियों के संबंध में अपनी शक्ति का प्रयोग करता है। बाइबल की सत्यता और सुसमाचार की सत्यता के लिए जो भी दावे किए जा रहे हैं, दिमाग उन्हें देखता है और उनका आकलन करता है। "आम तौर पर वह पूरी तरह से बिना तैयारी के,

उन लोगों को राज्य में नहीं लाता है जिनके दिमाग और कल्पना पर उन विचारों का पूरी तरह से प्रभुत्व है जो सुसमाचार की स्वीकृति को तार्किक रूप से असंभव बनाते हैं।"

फ्रांसिस शेफ़र अक्सर लोगों के बारे में पूर्व-प्रचारक के रूप में बात करते थे और उनका मतलब प्रश्नों से निपटना, धर्मग्रंथ सुनने या सुसमाचार के संदेश पर आपत्तियों का उत्तर देने का प्रयास करना था। मुझे लगता है कि मैकेन यहां इसी बारे में बात कर रहे हैं।

मैंने मैकेन का एक और निबंध सूचीबद्ध किया है जो आपके उद्धरण पृष्ठ 32-33 में है। उस चर्चा में वह कुछ ऐसी ही बातें कहते हैं। आइए इनमें से कुछ अनुच्छेदों पर नजर डालें। मैकेन कहते हैं, "एक आदमी सुसमाचार के किसी सच्चे प्रचारक को सुनता है। उपदेशक एक पुस्तक के आधार पर बोलता है जो वहाँ मंच पर खुली हुई है। जैसे ही उस पुस्तक के शब्दों की व्याख्या की जाती है, जो सुनता है उसके हृदय के रहस्य खुल जाते हैं। यद्यपि एक लबादा खींच लिया गया था। मनुष्य अचानक स्वयं को वैसे ही देखता है जैसे ईश्वर उसे देखता है। उसे अचानक पता चलता है कि वह परमेश्वर के उचित क्रोध और अभिशाप के तहत एक पापी है। फिर उसी अजीब किताब से संप्रभु सत्ता का एक और हिस्सा सामने आता है। उपदेशक, जैसे ही वह पुस्तक की व्याख्या करता है, राजा का राजदूत, जीवित ईश्वर का दूत प्रतीत होता है। जो व्यक्ति सुनता है उसे किसी और विचार की, किसी और तर्क की आवश्यकता नहीं होती। पवित्र आत्मा ने उसके हृदय के द्वार खोल दिये हैं। वह कहते हैं, 'वह पुस्तक जीवित परमेश्वर का वचन है; 'भगवान ने मुझे ढूंढ लिया है , मैंने उसकी आवाज सुनी है, मैं हमेशा के लिए उसका हूँ। "

फिर मैकेन टिप्पणी करते हैं, "हाँ, कभी-कभी इसी तरह से, और विस्तृत तर्क से नहीं, कि एक व्यक्ति आश्चर्य हो जाता है कि बाइबल ईश्वर का वचन है।" लेकिन फिर आप ध्यान दें कि वह वही दोहराता है जो उसने दूसरे उद्धरण में कहा था, "फिर भी इसका मतलब यह है कि तर्क अनावश्यक है... मैं अपनी पूरी आत्मा से आश्चर्य हो सकता हूँ कि बाइबिल ईश्वर का वचन है; लेकिन अगर मेरा पड़ोसी यह दिखाने के लिए विचार प्रस्तुत करता है यह वास्तव में त्रुटि से भरा है, मैं उन विचारों के प्रति उदासीन नहीं हो सकता। मैं वास्तव में उससे कह सकता हूँ 'आपके विचार गलत हैं, और क्योंकि वे गलत हैं, मैं अच्छे

विवेक के साथ अपने दृढ़ विश्वास पर कायम रह सकता हूँ।' या मैं उससे कह सकता हूँ, 'आप जो कहते हैं वह अपने आप में काफी सच है लेकिन यह इस सवाल के लिए अप्रासंगिक है कि क्या बाइबल ईश्वर का वचन है।' लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा कि दुनिया में मैं उनसे कैसे कह सकूँ, 'आपके विचार मेरे इस विश्वास के विपरीत हो सकते हैं कि बाइबिल ईश्वर का वचन है, लेकिन मुझे उनमें कोई दिलचस्पी नहीं है; यदि आप चाहते हैं तो उन्हें पकड़े रहें ऐसा करें, लेकिन कृपया मेरी इस बात से भी सहमत हों कि बाइबल ईश्वर का वचन है।' यह एक बहुत ही वास्तविक स्थिति है। वह कहते हैं, "नहीं, मैं संभवतः ऐसा नहीं कह सकता।" वह अंतिम रवैया निश्चित रूप से काफी बेतुका है। दो विरोधाभासी बातें दोनों सच नहीं हो सकती हैं। हम बाइबल को ईश्वर के वचन के रूप में नहीं मान सकते हैं और साथ ही उन विचारों की सच्चाई को स्वीकार नहीं कर सकते हैं जो हमारे उस दृढ़ विश्वास के विपरीत हैं।

मैं अपनी पूरी आत्मा से विश्वास करता हूँ, दूसरे शब्दों में, ईसाई क्षमायाचना की आवश्यकता, ईसाई विश्वास की तर्कसंगत रक्षा की आवश्यकता, और विशेष रूप से ईसाई दृढ़ विश्वास की तर्कसंगत रक्षा कि बाइबिल ईश्वर का वचन है।

और फिर वह कहते हैं, वह एक छात्र सम्मेलन में थे जहां प्रचार के तरीकों पर चर्चा हो रही थी। वह कहते हैं कि किसी ने उठकर कहा (उस अगले पैराग्राफ के बीच में), "जब तक आप उसके साथ बहस करना बंद नहीं कर देते, तब तक आप किसी व्यक्ति को मसीह के पास नहीं ला सकते।" आपने संभवतः यह पहले भी सुना होगा। वह कहते हैं, "वैसे आप मेरे दोस्तों को जानते हैं, जब उन्होंने कहा कि मैं थोड़ा भी प्रभावित नहीं हुआ। निःसंदेह कोई भी व्यक्ति कभी भी *केवल* तर्क से मसीह के पास नहीं पहुँच सकता। यह बिल्कुल स्पष्ट है। नए जन्म में परमेश्वर की आत्मा का रहस्यमय कार्य अवश्य होना चाहिए। इसके बिना, वे सभी तर्क बिल्कुल बेकार हैं। लेकिन चूंकि तर्क अपर्याप्त हैं, इसका मतलब यह नहीं है कि वे अनावश्यक हैं। नए जन्म में पवित्र आत्मा जो करता है, वह किसी व्यक्ति को सबूतों की परवाह किए बिना ईसाई बनाना नहीं है, बल्कि इसके विपरीत उसकी आँखों से धुंध को दूर करना और उसे सबूतों पर ध्यान देने में सक्षम बनाना है।

इसलिए मैं बाइबल की प्रेरणा की तर्कसंगत रक्षा में विश्वास करता हूँ। कभी-कभी यह किसी व्यक्ति को मसीह के पास लाने में तुरंत उपयोगी होता है... लेकिन इसका मुख्य उपयोग कुछ अलग तरह का होता है। इसका मुख्य उपयोग ईसाई लोगों को वैध सवालों का जवाब देने में सक्षम बनाना है, न कि ईसाई धर्म के प्रबल विरोधियों द्वारा, बल्कि उन लोगों के लिए जो सत्य की तलाश कर रहे हैं और हर तरफ सुनाई देने वाली शत्रुतापूर्ण आवाज़ों से परेशान हैं। तो, मैकेन की वे टिप्पणियाँ हैं।

5. विश्वास और कारण - 1 पीटर 3:15 - सेंट ऑगस्टीन उस हैंडआउट पर मेरी अगली टिप्पणी यह है कि हृदय को खोलना पवित्र आत्मा का कार्य है। सबूत पेश करना हमारी जिम्मेदारी है। मुझे ऐसा लगता है कि सुसमाचार के तर्क और बचाव के लिए एक जगह है। 1 पतरस 3:15 कहता है कि यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उस विश्वास के लिए कारण बताएं जो हमारे भीतर है।

अगले पैराग्राफ में दो अन्य लेख संदर्भित हैं। सबसे पहले, ए जे न्यूहौस, "व्हाई वी कैन गेट अलॉन्ग," *फ़र्स्ट थिंग्स में*। अपने उद्धरणों के पृष्ठ 33 पर जाएँ। वह इस लेख में आस्था और तर्क के बीच संबंध के बारे में बात कर रहे हैं। और वह कहते हैं, "विश्वास, कारण और प्रवचन के बीच संबंधों के बारे में सोचने में, सेंट ऑगस्टीन विशेष रूप से सहायक है। विशेष रूप से उनके भक्तिपूर्ण और उपदेशात्मक लेखों से कुछ अंश मिलना संभव है, जिनका उपयोग यह दिखाने के लिए किया जा सकता है कि ऑगस्टीन एक निष्ठावान व्यक्ति है, जो विश्वास के लिए तर्क का त्याग करता है। आप जानते हैं, मुझे ऐसा लगता है जैसे वह कोई ऐसा व्यक्ति है जो आल्डर्स का पद धारण करता है जब वह कहता है कि यह सब आंतरिक सिद्धांत है। हम या तो विश्वास करते हैं या हम विश्वास नहीं करते हैं। साक्ष्य का इससे कोई लेना-देना नहीं है। वह निष्ठावाद है। इसका उपयोग यह सुझाव देने के लिए किया जा सकता है कि ऑगस्टीन एक निष्ठावान व्यक्ति है, जो विश्वास के लिए तर्क का त्याग करता है। लेकिन यह एक गंभीर ग़लतफ़हमी होगी।" आप अक्सर ऐसा देखते हैं। उसने जानने के लिए विश्वास किया।

“ऑगस्टाइन ने बड़े परिष्कार से बताया कि ऐसा क्यों है कि विश्वास उचित है और ऐसा क्यों है कि विश्वास के बिना कारण अधूरा है। उदाहरण के लिए, बहुत ही आकर्षक निबंध है, *विश्वास की उपयोगिता*। शीर्षक ही ऑगस्टीन की धारणा को दर्शाता है कि ईसाई और गैर-ईसाई एक साथ विचार करने में सक्षम हैं कि सत्य को समझने के लिए क्या उपयोगी होगा। ऑगस्टीन का मानना है कि समझने के लिए विश्वास आवश्यक है। वह अपने अविश्वासी वार्ताकार को विश्वास करने का उचित मामला विस्तार से समझाता है। यह स्पष्ट है कि ऑगस्टाइन और उनके वार्ताकार ने एक समान *प्राथमिकता साझा की...* कि विश्वास को समझने के लिए आवश्यक है - रोजमर्रा की जिंदगी में, विज्ञान में, दोस्ती में और धार्मिक मामलों में और विश्वास क्यों आवश्यक है क्योंकि यह स्वयं तर्कसंगत रूप से व्याख्या योग्य है। ऑगस्टीन कहते हैं, 'विश्वास करने के लिए मेरे शब्दों को समझें, लेकिन समझने के लिए भगवान के शब्दों पर विश्वास करें।' जैसा कि इपथम गिलसन लिखते हैं... '[ऑगस्टीन में] विश्वास की संभावना तर्क पर निर्भर करती है... क्योंकि केवल तर्क ही विश्वास करने में सक्षम है।'

फिर, 'कारण और विश्वास के बीच संबंधों से संबंधित ऑगस्टिनियन सिद्धांत में तीन चरण शामिल हैं: तर्क द्वारा विश्वास की तैयारी, विश्वास का कार्य, विश्वास की सामग्री को समझना।' लेकिन ऑगस्टाइन ने स्वयं इसे सबसे अच्छा कहा, 'कोई भी किसी भी चीज़ पर तब तक विश्वास नहीं करता जब तक कि वह पहले यह न सोचे कि यह विश्वसनीय है।' जिस बात पर विश्वास किया जाए उस पर पहले विचार करने के बाद ही विश्वास किया जाना चाहिए। हर कोई जो सोचता है वह विश्वास नहीं करता, क्योंकि बहुत से लोग विश्वास न करने के लिए सोचते हैं; परन्तु जो कोई विश्वास करता है वह सोचता है।'

ऑगस्टीन उस चीज़ का कट्टर विरोधी था जिसे बाद में फ़ाइडिज्म कहा जाने लगा। यह दावा कि विश्वास पूरी तरह से मनमाना है - कि यह समर्थित नहीं है और जो उचित है उसके बारे में *प्राथमिकता से अपील* नहीं कर सकता - ऑगस्टीन में या उस मामले में ईसाई विचार की महान परंपरा की मुख्यधारा में कोई समर्थन नहीं मिलता है।

6. ऐतिहासिक रूप से आमेरस्टेडम - पूर्वकल्पित; प्रिंसटन - साक्ष्यवादी

तो, न्यूहौस के लेख का वह छोटा सा दूसरा पैराग्राफ है। और फिर आपकी रूपरेखा में उल्लिखित अगला लेख डोनाल्ड फुलर और रिचर्ड गार्डिनर का एक काफी लंबा लेख है, जिसका शीर्षक है, "उन्नीसवीं सदी के अंत में प्रिंसटन और एम्स्टर्डम में सुधारित धर्मशास्त्र: एक पुनर्मूल्यांकन।" इसे 1995 में कोवेनेंट थियोलॉजिकल सेमिनरी में प्रकाशित किया गया था। मुझे लगता है कि यह 1900 के दशक की शुरुआत में प्रिंसटन जैसी जगहों पर उत्पन्न विचारधारा के स्कूलों की स्थिति को समझाने में बेहद मददगार है। एक समय था जब एम्स्टर्डम विश्वविद्यालय में उत्पन्न विचारधारा पूर्वकल्पनावादी क्षमाप्रार्थी थी और प्रिंसटन विचारधारा साक्ष्यवादी थी, जहां तक क्षमाप्रार्थी का संबंध था।

यह काफी लम्बा लेख है। आप देखेंगे कि मेरे पास पृष्ठ 34 से शुरू होकर पृष्ठ 37 तक जाने वाले आपके उद्धरणों में इसके काफी अंश हैं। मैं इसे पढ़ने के लिए समय नहीं लेना चाहता, लेकिन मैं आपको इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता हूँ। मुझे लगता है कि आप पाएंगे कि यह काफी जटिल हो गया है, लेकिन मुझे लगता है कि आप इसे इन मुद्दों को सुलझाने में मददगार पाएंगे।

बस पृष्ठ 37 की ओर मुड़ें और हम अंतिम 2 पैराग्राफ देखेंगे जहां फुलर और गार्डिनर कहते हैं, "वॉरफील्ड और पुराने प्रिंसटन धर्मशास्त्रियों का मानना था कि ईश्वर का ज्ञान प्रदान करने के लिए तर्क और विश्वास ने सच्चे मानव ज्ञान के साथ समन्वय किया, यहां तक कि यदि ज्ञान अधूरा था। विश्वास और तर्क की यह *समन्वित* धारणा ऑगस्टिनिज्म में निहित है," जैसा कि न्यूहौस कह रहा था, "उन्नीसवीं शताब्दी के सकारात्मकता के साथ गहराई से विरोधाभास है," - आत्मज्ञान प्रकार की सोच - और "इसका मतलब है कि भगवान के बारे में संयुक्त राष्ट्र से बात करना -पुनर्जीवित वास्तव में मायने रखता है। धर्मनिरपेक्ष बौद्धिक दृष्टिकोण के साथ ईसाई जुड़ाव के लिए वारफील्ड का दृष्टिकोण, कुयपर के रिट्रीटिस्ट अभिविन्यास से काफी अलग है। यह उस व्यक्तिपरक स्थिति, आंतरिक सिद्धांत की ओर वापसी थी। "वॉरफील्ड लिखते हैं, 'आइए, हम दिन की जांच के खिलाफ साहस का

रवैया अपनाएं। उनमें से किसी को भी हमसे अधिक उत्साही नहीं होना चाहिए। किसी को भी नहीं होना चाहिए हर क्षेत्र में सत्य को समझने में अधिक तेज, इसे प्राप्त करने में अधिक मेहमाननवाज़, जहां भी यह ले जाए, इसका पालन करने में अधिक वफादार। उस समय की जांच और खोजों के संबंध में ईसाइयों को गुनगुना होना उचित नहीं है। लेकिन इसलिए यह हमारे लिए है। ईसाइयों को अधिकतम जांच करने, हर विज्ञान में अग्रणी बनने, आलोचना के स्वर में खड़े होने, हर क्षेत्र में हमारे उद्धारक में विश्वास की सच्चाई को पकड़ने वाले पहले व्यक्ति बनने की जरूरत है। चर्च का अभिशाप उसकी उदासीनता रही है सत्य... उसे सत्य से डरने की कोई आवश्यकता नहीं है; लेकिन उसे डरने के लिए सब कुछ है, और वह पहले से ही लगभग सब कुछ, अज्ञानता से पीड़ित है। मसीह, सत्य के अनुयायियों के रूप में सभी सत्य हमारे लिए हैं; आइए हम अंततः अपने में प्रवेश करें विरासत।" तो, ये इस बड़े प्रश्न पर कुछ टिप्पणियाँ हैं, "क्या भविष्यवाणी-पूर्ति के लिए क्षमाप्रार्थी मूल्य है?" ये कुछ पद हैं जिन्हें ले लिया गया है।

बी. बाइबिल का रहस्योद्घाटन दावा

बी. पृष्ठ 5 पर शीर्षक है, "बाइबल का रहस्योद्घाटन दावा।" बाइबल स्वयं को ईश्वर के वचन के रूप में प्रस्तुत करती है, न कि केवल मानवीय विचार या प्रतिबिंब के उत्पाद के रूप में। बाइबल का अधिकांश भाग मानव इतिहास से संबंधित है, और इसके भविष्यसूचक खंडों में बाइबल भविष्य के इतिहास की व्यापक रेखाओं को चित्रित करने का दावा करती है जो कि ईश्वर की संप्रभु इच्छा से निर्धारित होती है जो इसके माध्यम से बोलता है। इस अनूठे दावे के लिए सत्यापन और परीक्षण की आवश्यकता है और यह निश्चित रूप से खुला है। चाहे कोई बाइबल पर विश्वास करे या न करे, इसके ऐतिहासिक कथन (भविष्यवाणी और गैर-भविष्यवाणी दोनों) कुछ ऐसे हैं जिन्हें काफी हद तक सत्यापन के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है। बाइबल इंगित करती है कि इतिहास के लिए इसकी अधिकांश प्रकट योजना पहले ही इज़राइल के इतिहास और यीशु मसीह की उपस्थिति में साकार हो चुकी है। यह

हमारा तर्क है कि भविष्यवाणी और पूर्ति के बीच संबंध में, विशेष रूप से पुराने नियम और ईसा मसीह के बीच, एक वस्तुनिष्ठ भविष्यवाणी/पूर्ति संरचना पाई जानी चाहिए जो स्पष्ट रूप से दिखाई दे या पहचानने योग्य हो। इस भविष्यवाणी/पूर्ति संरचना का अस्तित्व उस ईश्वर के अस्तित्व और सत्यता की ओर इशारा करता है जिसने बाइबिल रहस्योद्घाटन में बात की है।

इस भविष्यवाणी/पूर्ति संरचना की विशेषता यह नहीं है कि इसे धार्मिक या आध्यात्मिक गुणवत्ता कहा जा सकता है। यह कुछ व्यक्तिपरक या आंतरिक नहीं है। बल्कि, यह कुछ ऐसा है जो अपने स्वभाव से ही धार्मिक व्यक्तिपरकता को तोड़ता है, क्योंकि यह एक पहचानने योग्य इकाई के रूप में खड़ा है जो उस ईश्वर के प्रति धार्मिक प्रतिबद्धता की आवश्यकता के अलावा बाइबिल रहस्योद्घाटन के ईश्वर की वास्तविकता और सत्यता की ओर इशारा करता है। दूसरे शब्दों में, आप किसी भविष्यवाणी को देख सकते हैं और इतिहास को देख कर देख सकते हैं कि क्या वह पूरी हुई है, और यह ऐसी चीज़ है जिसे सत्यापन के लिए प्रस्तुत किया जा सकता है; वह स्वयं से बाहर की चीज़ है।

पुराने नियम और नए नियम में हम देखते हैं कि ईश्वर के अस्तित्व का प्रदर्शन मुख्य रूप से स्पष्ट रूप से पहचानने जाने योग्य संकेतों और भविष्यवाणी और पूर्ति की सुसंगतता पर आधारित है। दूसरे शब्दों में, यदि आप बाइबल को ही लें, तो परमेश्वर स्वयं को कैसे प्रकट करता है? निर्गमन की घटनाओं के बारे में सोचें और उन विपत्तियों से गुजरें जहां कथन स्पष्ट है। “ये बातें इसलिये की जाती हैं कि तुम जान लो कि मैं यहोवा हूँ।” आप उन्हें देख सकते हैं। आप देख सकते हैं कि मूसा पहले से बोलता है और फिर ऐसा होता है। यह जोशुआ में भी सच है जहां जॉर्डन नदी को पार करने और जेरिको पर कब्ज़ा करने के साथ भी यही होता है। इसलिए, ईश्वर के अस्तित्व का प्रदर्शन मुख्य रूप से पहचानने योग्य संकेतों और भविष्यवाणी और पूर्ति की सुसंगतता पर आधारित है। हालाँकि यह सच है कि ईश्वर के "अस्तित्व" की बौद्धिक मान्यता अस्तित्वगत अर्थ में विश्वास नहीं है, क्योंकि विश्वास मनुष्य और ईश्वर के बीच संबंध विकसित करने वाले पवित्र आत्मा के कार्य से संभव है। फिर भी, यह वास्तविक विश्वास का परिणाम और पूर्व शर्त है। सच्चा विश्वास ईश्वर ने इतिहास में,

अपनी शक्ति और अस्तित्व में जो प्रदर्शित किया है, उसकी प्रतिक्रिया है। इस सब में यह याद रखना आवश्यक है कि एक वस्तुनिष्ठ रहस्योद्घाटन है। यह वस्तुनिष्ठ रहस्योद्घाटन उस विश्वास की प्रतिक्रिया के अलावा मौजूद है जो पवित्र आत्मा द्वारा व्यक्ति में तब काम किया जाता है जब वह व्यक्ति खुद को बाइबिल रहस्योद्घाटन के भगवान के प्रति समर्पित करता है। इस भेद को आंतरिक रहस्योद्घाटन और बाह्य रहस्योद्घाटन कहा जा सकता है। गलतफहमी से बचने के लिए, हमें यह स्पष्ट करना चाहिए कि वस्तुनिष्ठ भविष्यवाणी मौजूद है और एक पहचाने जाने योग्य चरित्र, बाहरी रहस्योद्घाटन द्वारा पहचानी जाती है।

मुझे ऐसा लगता है कि आल्डर्स जैसे लोग इसी चीज़ को मिस करते हैं। वे उस आंतरिक सिद्धांत के बारे में बात करते हैं। एकदम बढ़िया। हां, वह आंतरिक सिद्धांत है लेकिन वह पवित्र आत्मा है जो हमारे अंदर पुनर्जीवित हो रहा है और मन को खोल रहा है। इसके बिना किसी को भी सत्य का ज्ञान नहीं हो सकता। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि कोई बाहरी सिद्धांत या बाहरी रहस्योद्घाटन नहीं है - कुछ ऐसा जो वास्तव में मौजूद है जो इस बात का प्रमाण देता है कि ईश्वर वही है जो वह होने का दावा करता है। इसी तरह से भगवान ने खुद को पवित्रशास्त्र, संकेतों और चमत्कारों और भविष्यवाणी/पूर्ति के

माध्यम से जाना। सी. भविष्यवाणी और पूर्ति

तो यह हमें सी., "भविष्यवाणी और पूर्ति" पर लाता है। पुराने नियम में हमारा सामना ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के एक अनोखे और आश्चर्यजनक रूप से होता है। इस रहस्योद्घाटन में ऐसे घटक शामिल हैं जो इज़राइल के ईश्वर की वास्तविकता को उद्देश्यपूर्ण और पहचानने योग्य तरीके से प्रदर्शित करने के लिए पर्याप्त हैं। वे सम्मिलित करते हैं:

1. ईश्वर अपने अस्तित्व और शक्ति को कई तरीकों से कई गवाहों के बीच पहचानने योग्य बनाता है, जिसमें संकेत, चमत्कार और थियोफनी शामिल हैं। यह कुछ ऐसा है जो वहां मौजूद है। इसे कई गवाहों द्वारा देखा जा सकता है और देखा भी गया है।
2. परमेश्वर अपने प्रवक्ता भविष्यवक्ताओं के माध्यम से भविष्य के इतिहास की एक योजना बताता है।

3. भविष्य के इतिहास के लिए यह योजना फलीभूत हुई है जैसा कि भविष्यवक्ताओं द्वारा प्रतिपादित और भविष्यवाणी की गई थी।

ध्यान दें कि पहले घटक में - संकेत, चमत्कार और थियोफनी - किसी चीज़ की बोधगम्य प्रस्तुति है जिसमें यहोवा स्वयं को प्रकट करने का दावा करता है। दूसरे दो घटकों का उद्देश्य उस दावे के साक्ष्य की पुष्टि करना है, यानी भविष्यवाणी और पूर्ति, योजना और निष्पादन।

यहां यह कहा जा सकता है कि पुराना नियम अन्य सभी "धार्मिक रहस्योद्घाटन" से खुद को अलग करता है, क्योंकि वह केवल इस आधार पर विश्वास को बढ़ावा नहीं देता है कि कुछ लोग दिव्य रहस्योद्घाटन द्वारा प्राप्त होने का दावा करते हैं। कोई भी वहां जा सकता है और कह सकता है कि भगवान ने मुझसे बात की है। मुहम्मद ने यही किया। ऐसा कोई भी कर सकता है. लेकिन यह इस आधार पर विश्वास को बढ़ावा नहीं दे रहा है कि लोगों ने दावा किया है कि उन्हें ईश्वरीय रहस्योद्घाटन से प्राप्त हुआ है। बल्कि, विश्वास रहस्योद्घाटन में स्थापित होता है जो बाहरी संकेतों और पूर्व घोषित योजना के अनुसार इतिहास की प्रगति से जुड़ा होता है। रूपरेखा में मैंने इसके कुछ बाइबिल उदाहरण दिए हैं।

अब मैं यहाँ एक भेद करना चाहता हूँ। वे चिन्ह और चमत्कार उन लोगों के लिए ईश्वर के अस्तित्व और शक्ति के प्रमाणीकरण का कार्य करते हैं जिन्होंने उस समय उन्हें देखा था। हम अब वहां नहीं हैं. हम बस इतना कर सकते हैं कि उस समय भगवान ने क्या किया और कैसे उन्होंने खुद को अपने लोगों के सामने प्रकट किया, पलायन के समय से लेकर विजय के समय या ईसा मसीह के पहले आगमन के बारे में रिपोर्टें पढ़ीं।

अगले पैराग्राफ में, मैं उल्लेख करता हूँ कि पुराने नियम में ईश्वर के अस्तित्व के लिए कोई पौराणिक या आध्यात्मिक तर्क नहीं दिया गया है। यह वह तरीका नहीं है जिससे ईश्वर अपने अस्तित्व को प्रदर्शित करता है।

1. पैगंबर स्व-प्रमाणीकरण अगला पैराग्राफ। भविष्यवक्ताओं के शब्दों को प्रमाणित करने और अपनी उपस्थिति को अपने लोगों के सामने प्रकट करने के लिए भगवान ने जो

संकेत दिए, उन्होंने रहस्योद्घाटन और मुक्ति की ऐतिहासिक प्रगति के संबंध में तत्काल और प्रत्यक्ष प्रमाणीकरण उद्देश्य पूरा किया। रहस्योद्घाटन के पूरा होने के साथ हमें ऐसे संकेतों की निरंतरता की तलाश नहीं करनी चाहिए। हमने रहस्योद्घाटन और मुक्ति की प्रगति के बारे में वोस की अवधारणा के संबंध में पहले भी बात की है। रहस्योद्घाटन में वस्तुनिष्ठ पक्ष के साथ-साथ व्यक्तिपरक व्यक्तिगत पक्ष भी होता है। रहस्योद्घाटन वास्तव में मुक्ति की व्याख्या है और रहस्योद्घाटन इसके साथ-साथ चलता है। लेकिन जब मुक्ति मसीह में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचती है, तो रहस्योद्घाटन का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। लेकिन वह दूसरा मुद्दा है। हम ऐसे संकेतों की निरंतरता की आशा नहीं करते। इसलिए, संकेत आज हमारे लिए *वही प्रत्यक्ष प्रमाणिक उद्देश्य* नहीं निभाते हैं जैसा कि उन्होंने उन लोगों के लिए किया था जिन्हें मूल रूप से संकेत दिए गए थे। हालाँकि, भविष्यवाणी और पूर्ति के बीच का संबंध इस तरह का है कि बाइबिल के रहस्योद्घाटन के भगवान के अस्तित्व और सत्यता के प्रमाण के रूप में *इसका मूल्य* आने वाली पीढ़ियों के बीच भी, *प्रत्यक्ष तरीके से कार्य करना जारी रखता है*। दूसरे शब्दों में, संकेत और चमत्कार उसी समय कार्य करते हैं जिस समय उन्हें दिया गया था। अब हम इसकी रिपोर्ट पढ़ते हैं। भविष्यवाणी और पूर्ति आने वाली पीढ़ियों के लिए भी कार्य करती रहती है क्योंकि ये पीढ़ियाँ उस भविष्यवाणी/पूर्ति संरचना को देख सकती हैं। यदि आप यह स्थापित कर सकते हैं कि भविष्यवाणी एक निश्चित बिंदु और समय पर दी गई थी और यह सदियों बाद तक पूरी नहीं हुई थी। इस प्रकार की भविष्यवाणियों के कई उदाहरण हैं - उनमें कुछ ऐसा है जो मुझे लगता है कि क्षमाप्रार्थी है।

2. ब्लूम, गॉघ और न्यूमैन: परीक्षण योग्य चमत्कार

जेए ब्लूम और एचजी गॉघ और आरसी न्यूमैन, जो कई वर्षों तक यहां नए नियम के प्रोफेसर थे, तर्क देते हैं कि पूरी की गई भविष्यवाणी एक सुलभ प्रकार का चमत्कार है, एक रिपोर्ट किए गए चमत्कार के बजाय एक परीक्षण योग्य चमत्कार है। तुम्हें वहाँ भेद दिखाई देता है? उनका तर्क है कि चूंकि पूरी की गई भविष्यवाणी एक सुलभ प्रकार का चमत्कार है,

एक रिपोर्ट किए गए चमत्कार के बजाय एक परीक्षण योग्य चमत्कार है, भविष्यवाणी का यह चरित्र रिपोर्ट किए गए चमत्कार की कठिनाई को दूर करने का काम करता है जैसे कि जो हुआ उसका अवलोकन या व्याख्या करना। भविष्यवाणी चमत्कार के निजी अनुभव से अलग है क्योंकि इसकी पूर्ति अक्सर किसी भी इच्छुक व्यक्ति द्वारा परीक्षण योग्य होती है, चाहे वह व्यक्ति बाइबिल के आस्तिक विश्वदृष्टि के प्रति सहानुभूति रखता हो या नहीं। तो फिर, इज़राइल का ईश्वर वह है जो उन चीज़ों के आधार पर विश्वास का दावा करता है जो लोगों ने उसके बारे में देखी और अनुभव की हैं। तार्किक रूप से या तार्किक रूप से बोलते हुए, यह कहा जा सकता है कि पुराना नियम दर्शाता है कि इज़राइल विश्वास करने के अलावा शायद ही कुछ कर सकता है क्योंकि वह वस्तुनिष्ठ तथ्यों से जान सकता है कि यहोवा है। यदि आप उन लोगों में से थे जिन्हें मिस्र से बाहर भेजा गया था तो आप उस निष्कर्ष पर कैसे नहीं पहुंच सकते थे? और उसका कोई भी शब्द उसके पास खाली या निरर्थक नहीं लौटता। इस्राएल जानबूझकर उन चीज़ों से मुंह मोड़ सकता था और किया भी जो स्पष्ट रूप से मूर्तिपूजा थीं। प्रभु ने अपने लोगों को कई अचूक चीज़ें दीं, एनआईवी के पास अधिनियम 1 के शब्दों का उपयोग करने के लिए "ठोस" सबूत हैं, जहां वह अपने अस्तित्व और शक्ति की सत्यता का दावा करता है। अपनी गवाही में हमें कुछ भी कम नहीं करना चाहिए, और बस उन तरीकों को अपनाना चाहिए जिन्हें भगवान ने स्वयं अपने लोगों को प्रदर्शित करने के लिए अपनाया था कि वह मौजूद हैं। इस तरह उसने अपने लोगों का उद्धार किया।

तो, उस संदर्भ में, निष्कर्ष में उल्लिखित कुछ योग्यताओं को देखते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि भविष्यवाणी और पूर्ति कुछ ऐसी है जो सत्यापन योग्य और परीक्षण योग्य है, और यह एक वस्तुनिष्ठ संरचना है जो व्यक्ति के बाहर खड़ी है। बाइबल और मानव जाति के मुक्तिदाता के रूप में ईसा मसीह के सत्य दावों की ओर इशारा करने का क्षमाप्रार्थी अर्थ में इसका एक वैध कार्य है। मैं निष्कर्ष नहीं पढ़ूंगा, आप स्वयं ऐसा कर सकते हैं। तो वह रोमन अंक X है।

XI. ओबद्याह

आपके कक्षा व्याख्यान की रूपरेखा के पृष्ठ 6 पर हम पाठ्यक्रम के नए खंड, "भविष्यवाणी पुस्तकों का सर्वेक्षण" पर आते हैं। जैसा कि मैंने आपको पहले बताया था, मैं अपने शेष पाठ्यक्रम के लिए होशे, ओबद्याह, जोएल और आमोस के छोटे भविष्यवक्ताओं के माध्यम से जाना चाहता हूँ।

1. परिचयात्मक टिप्पणियाँ बिंदु 1 है, "परिचयात्मक टिप्पणियाँ।" तो ओबद्याह जाने से पहले, मैं कुछ सामान्य टिप्पणियाँ करना चाहूँगा। हमने पहले भविष्यवाणी पुस्तकों के वर्गीकरण के बारे में बात की थी और यहूदी परंपरा में पूर्व पैगंबरों और बाद के पैगंबरों का वर्गीकरण है। आज हमारी परंपरा में पूर्व पैगंबर ऐतिहासिक पुस्तकें हैं: जोशुआ, जज, सैमुअल्स और किंग्स।

बाद के भविष्यवक्ताओं को हम भविष्यसूचक पुस्तकें कहते हैं। वे दो समूहों में विभाजित हैं। मुझे यकीन है कि आप उस वर्गीकरण से परिचित हैं: प्रमुख पैगम्बर और छोटे पैगम्बर। बड़े और छोटे शब्दों का महत्व या महत्व से कोई लेना-देना नहीं है, बल्कि केवल लंबाई से है। प्रमुख भविष्यवक्ता बड़े हैं: यशायाह, यिर्मयाह, ईजेकील और डैनियल। छोटे भविष्यवक्ता 12 हैं। मुझे लगता है कि आपको उनके नाम पता होने चाहिए, मैं सूची पर ध्यान नहीं दूँगा।

लेकिन मैं छोटे पैगंबरों की सूची की व्यवस्था के बारे में कुछ कहना चाहता हूँ। आप बुलॉक में पढ़ रहे हैं, वास्तव में आप बुलॉक द्वारा बताए गए क्रम से भिन्न क्रम में पढ़ रहे हैं और इसका कारण बस इतना है कि बुलॉक द्वारा कुछ भविष्यवक्ताओं के साथ डेटिंग करना मेरे द्वारा उन्हें डेट करने के तरीके से भिन्न था। उदाहरण के लिए, पहला ओबद्याह है।

2. छोटे पैगम्बरों का क्रम लेकिन आप इस प्रश्न पर आते हैं कि आज हमारी बाइबिल में छोटे पैगम्बर उसी क्रम में क्यों हैं जिस क्रम में वे वर्तमान में आते हैं? जब आप हमारी

अंग्रेजी बाइबिल में देखते हैं, और यह हिब्रू बाइबिल में भी सच है, छोटे पैगंबरों में, आपके पास हैं: होशे, जोएल, अमोस और ओबद्याह पहले चार के रूप में, और फिर जोनाह और मीका। लेकिन यदि आप सेप्टुआजेंट पर जाएं, तो पहले 6 इस क्रम में हैं: होशे, अमोस, मीका, जोएल, ओबद्याह और योना। यह बिल्कुल अलग क्रम है। जिस क्रम से हम परिचित हैं वह हिब्रू बाइबिल से लिया गया है और सेप्टुआजेंट में एक अलग क्रम है। यदि आप दोनों सूचियों को देखें, तो जहाँ तक पुस्तकों के क्रम की बात है, उनमें से किसी भी सूची के लिए बहुत कम स्पष्ट मानदंड प्रतीत होते हैं। मुझे लगता है कि ध्यान देने योग्य बात यह है कि हाग्वै, जकर्याह और मलाकी अंतिम स्थान पर हैं और वे सभी निर्वासन के बाद के हैं। तो ऐसा लगता है कि कम से कम उन अंतिम पुस्तकों में एक कालानुक्रमिक तत्व है। क्रम में अमोस को होशे के बाद रखा गया है। होशे, अमोस ओबद्याह। फिर भी अमोस होशे से पहले था। तो आपके पास यह प्रश्न है, और मुझे नहीं लगता कि कोई भी कभी भी सेप्टुआजेंट या हिब्रू बाइबिल में पुस्तकों के क्रम के लिए कोई ठोस स्पष्टीकरण लेकर आया है। लेकिन मुझे लगता है कि हमें इसके प्रति सचेत रहना चाहिए।

3. छोटे पैगंबरों के साथ डेटिंग

हम ओबद्याह और जोएल के साथ डेटिंग के मुद्दों पर चर्चा करने जा रहे हैं। उन दोनों को डेट करना बहुत मुश्किल है। लेकिन मुझे लगता है कि यदि आप उन राष्ट्रों का उपयोग करते हैं जो इज़राइल और यहूदा के इतिहास को प्रभावित करने वाली प्रमुख शक्ति थे, तो आप भविष्यवक्ताओं को तीन अवधियों में विभाजित कर सकते हैं: असीरियन काल, नव-बेबीलोनियन काल और फारसी काल। यह वह क्रम है जिसका आप बुलॉक में अपने पढ़ने में पालन कर रहे हैं। तो असीरियन काल में नौ पैगंबर हैं, बेबीलोनियन काल में - यिर्मयाह, ईजेकील, डैनियल, सफन्याह और हबक्कूक, और फारसी काल में - हाग्वै, जकर्याह और मलाकी। तो बस उन पुस्तकों में से पहली चार को देखते हुए सामान्य टिप्पणियाँ: होशे, जोएल, अमोस और ओबद्याह।

ए. ओबद्याह चलिए ओबद्याह चलते हैं। मैंने तुम्हें वह हैंडआउट दिया। आप देखेंगे कि रोमन अंक II के अंतर्गत A. है, "ओबद्याह की तिथि और लेखक।" मुझे लगता है कि हमने उल्लेख किया था कि ओबद्याह अब तक की सबसे कठिन तारीखों में से एक है। तिथि पर मतभेद उदारवादी या रूढ़िवादी दृष्टिकोण पर आधारित नहीं हैं और वे लगभग 840 ईसा पूर्व से लेकर हैं, जो इसे सबसे प्रारंभिक बनाता है, 586 ईसा पूर्व के आसपास यरूशलेम के विनाश के आसपास, और फिर कुछ 450 के आसपास तक। तो आप इसे वहां देख सकते हैं निष्कर्षों की एक विस्तृत श्रृंखला है।

डेटिंग प्रश्न के मूल में यरूशलेम की लूट की पहचान निहित है जिसका उल्लेख श्लोक 10 और 11 में किया गया है। यदि आप ओबद्याह की ओर मुड़ते हैं, जो एक अध्याय की पुस्तक है, तो आप देखेंगे, यह एदोमियों के खिलाफ एक दैवज्ञ है। एदोमियों पर न्याय सुनाया जा रहा है। श्लोक 10 और 11 में, ओबद्याह कहता है, "तुम्हारे भाई याकूब के खिलाफ हिंसा के कारण," (एदोमवासी एसाव के वंशज हैं), "तुम शर्म से डूब जाओगे, तुम उस दिन हमेशा के लिए नष्ट हो जाओगे जिस दिन तुम अलग खड़े थे जब अजनबी ले जा रहे थे" उसकी सम्पत्ति लूट ली, और परदेशियों ने उसके फाटकों से प्रवेश करके यरूशलेम के लिये चिट्ठी डाली। आप उनमें से एक थे।" इसलिए यहां एदोमियों का यरूशलेम को लूटने में किसी प्रकार का संबंध होने का संदर्भ है। परदेशी धन लूट ले गए, और यरूशलेम के लिये चिट्ठी डाली। आपने देखा होगा कि मैं वहां कहता हूं कि मूल मुद्दा 10 और 11 में एदोमियों द्वारा यरूशलेम की लूट पर है और संभवतः 14 तक। यह एक व्याख्यात्मक मुद्दा बन जाता है और इसका तारीख पर असर पड़ता है। क्या श्लोक 12-14 भविष्य में यरूशलेम की इसी प्रकार की लूट की बात करते हैं या वे श्लोक 10 और 11 की निरंतरता हैं? मैं उस पर वापस आऊंगा और हम बाद में इस पर अधिक विस्तार से चर्चा करेंगे। लेकिन सबसे पहले, श्लोक 10 और 11 में उल्लिखित यरूशलेम की लूट की पहचान के लिए किन पदों पर तर्क दिया गया है? मैंने उनमें से 3 को यहां सूचीबद्ध किया है।

1. यहूदा के यहोराम के शासनकाल में पलिशतियों और अरबियों के गठबंधन द्वारा लूटपाट

ए है, "यहूदा के यहोराम के शासनकाल में पलिशतियों और अरबियों के गठबंधन द्वारा की गई लूट।" 2 इतिहास 21:8 में आपने पढ़ा कि यहोराम के समय में, "एदोम ने यहूदा से विद्रोह किया, और अपना राजा स्थापित किया।" श्लोक 10, "आज तक एदोम ने यहूदा के विरुद्ध विद्रोह किया है।" श्लोक 16 पर जाएँ। यह वही समय है, यहोराम के शासनकाल के दौरान, "यहोवा ने यहोराम के विरुद्ध पलिशतियों और अरबों की शत्रुता जगाई जो कूशियों के पास रहते थे। उन्होंने यहूदा पर आक्रमण किया, उस पर आक्रमण किया, और पुत्रों और पत्नियों समेत राजा के महल में जो कुछ मिला, सब लूट ले गए। एक भी पुत्र न बचा।" तो एदोमियों के विद्रोह से जुड़े यरूशलेम की लूट पर हमारे रिकॉर्ड हैं। 2 राजा 8:20 में आपके पास यहोराम के खिलाफ एदोमियों के विद्रोह का कोई संदर्भ नहीं है। इसलिए, यह संभव है कि एदोमियों ने उस आक्रमण में सहयोग किया और साझा किया लूट में। हो सकता है कि यही कारण ओबद्याह में एदोम पर फैसले के लिए उकसाया गया हो। यह प्रारंभिक दृष्टिकोण है।

2. 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम की बेबीलोनियाई लूट

दूसरा दृष्टिकोण यह है कि ओबद्याह के छंद 10 और 11 में आपके पास 586 ईसा पूर्व में यरूशलेम की बेबीलोनियाई लूट का संदर्भ है, नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम का विनाश, कुछ लोग कहते हैं, ईजेकील 35:5 द्वारा समर्थित है लेकिन संदर्भ निर्णायक नहीं है . यहजेकेल 35:5 कहता है (यह एदोम के लिए निर्देशित एक भविष्यवाणी है, न्याय की एक भविष्यवाणी), "क्योंकि तू ने प्राचीन शत्रुता पाल रखी थी, और इस्राएलियों को उनकी विपत्ति के समय, तलवार से, और उनके दण्ड के समय पर पहुंचा दिया इसका चरमोत्कर्ष," (स्पष्ट रूप से बाबुल द्वारा यरूशलेम के विनाश का समय सामने है), "इसलिये मेरे जीवन की शपथ, प्रभु यहोवा की यही वाणी है, मैं तुम्हें रक्तपात करने को देता हूँ, और वह तुम्हारा पीछा करेगा। चूँकि तुमने रक्तपात से घृणा नहीं की, इसलिए रक्तपात तुम्हारा पीछा करेगा।" तो, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट है कि, हाँ, 586 में यरूशलेम की लूट में एदोमियों की कुछ भागीदारी थी, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने पहले ऐसा नहीं किया

था! चूँकि एदोम ने बाद में यरूशलेम के विनाश के समय भी ऐसा ही रुख अपनाया था, इसका मतलब यह नहीं है कि उन्होंने पहले भी ऐसा कुछ नहीं किया था। 586 तारीख पर आपत्तियाँ यह हैं कि इसमें पूरी आबादी के निर्वासन का कोई उल्लेख नहीं है, शहर और मंदिर के विनाश का कोई उल्लेख नहीं है, न ही कविता 10 से नबूकदनेस्सर का कोई उल्लेख है, "क्योंकि आप अपने भाई के खिलाफ हिंसा करेंगे।" अधर्म से ढका हुआ।"

फिर पृष्ठ 2 के शीर्ष पर, संदर्भ के दो बिंदुओं के रूप में 10-11 और 12-14 की व्याख्या पर विचार किया जाना चाहिए। यिर्मयाह 49:1 में समान पदावली है और इसका ओबद्याह 1-6 से संबंध है। कुछ लोग डेटिंग के लिए इसका उपयोग करने का प्रयास करते हैं। यिर्मयाह 49:1-7 और ओबद्याह 1-6 के बीच भाषा में संकेत हैं। प्रश्न यह है कि किस पैगम्बर को प्राथमिकता दी जाती है? चीजें इस बात पर विभाजित हैं कि कौन सा मूल है या क्या दोनों किसी अज्ञात भविष्यवाणी के पुराने स्रोत को दर्शाते हैं। आप भाषा में इन समानताओं को कैसे समझाते हैं? क्या ओबद्याह यिर्मयाह की भाषा को प्रतिबिंबित कर रहा है? या क्या यह दूसरा तरीका है, क्या यिर्मयाह ओबद्याह की भाषा को प्रतिबिंबित कर रहा है? यह या तो हो सकता है। इसलिए मुझे नहीं लगता कि डेटिंग के बारे में किसी नतीजे पर पहुंचने का यह कोई तरीका है।

3. ओबद्याह की जेबी पायने आयत 10-11 आहाज के समय में सीरिया द्वारा इज़राइल पर हमले के बारे में बात करती है

लेकिन फिर जे. बार्टन पायने की ओर से तीसरा सुझाव यह आता है कि ओबद्याह की आयत 10-11 में आहाज के समय सीरिया द्वारा इज़राइल पर हमले के बारे में बात की गई है और उसके साथ-साथ एदोमियों ने भी हमला किया था। वह 2 इतिहास 28:16-18 है, जहाँ आप पढ़ते हैं, "उस समय राजा आहाज सहायता के लिये अश्शूर के राजा के पास गया। एदोमियों ने फिर आकर यहूदा पर आक्रमण किया और बन्दियों को ले गए, जबकि पलिशियों ने तलहटी में आक्रमण किया और फिर उन्होंने यहूदा को दे दिया। उन्होंने [इसके स्थानों पर] कब्ज़ा कर लिया।" तो यह एक और संभावना है, हालाँकि यरूशलेम का

कोई विशेष संदर्भ नहीं है।

अब जो आगे है वह तो बस कुछ नाम हैं। बेबीलोनियों, नबूकदनेस्सर द्वारा यरूशलेम को लूटने के बाद, 586 ईसा पूर्व के बाद की तारीख के कुछ समर्थक हैं। आरके हैरिसन लगभग 450 ईसा पूर्व की बाद की तारीख मानते हैं

तो यह डेटिंग के बारे में सवाल है, और जैसा कि मैंने बताया यह सवाल तब और उठता है जब आप श्लोक 10-11 और 12-14 को करीब से देखते हैं और आप जो निष्कर्ष निकालते हैं वह उनके बीच का संबंध है। मैं उस चर्चा को अभी कुछ मिनटों के लिए रोकना चाहता हूँ। लेकिन हम इस पर वापस आएंगे। लेकिन 10-11 में आप जेरूसलम की जिस लूट का जिक्र देखते हैं, वह डेटिंग पर आपके निष्कर्ष को प्रभावित करने वाली है।

4. ओबद्याह के लेखक

लेखक ओबद्याह है, जिसका अर्थ है, "प्रभु का सेवक।" वह एक भविष्यवक्ता है जिसके बारे में हम कुछ नहीं जानते। हमारे पास केवल उसकी भविष्यवाणी है और ओबद्याह की किताब में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इस व्यक्ति के बारे में कुछ कहता हो। पुराने नियम में कई अन्य ओबद्याह का उल्लेख है लेकिन किसी अन्य का उल्लेख नहीं किया गया है जो अहाब के समय से जुड़ा हो।

बी. ओबद्याह की पुस्तक का विषय

बी. है, "पुस्तक का विषय।" हम पहले ही यहां इसका थोड़ा-सा वर्णन कर चुके हैं। यह एदोम पर न्याय की घोषणा है। मैं पहले ही बता चुका हूँ कि एदोमी लोग एसाव के वंशज थे। उत्पत्ति में वापस जाएँ और एदोमियों का एसाव के साथ संबंध देखें। उत्पत्ति 36:8 हमें बताता है कि एसाव एदोम की सेईर पर्वत श्रृंखला में रहता था, जिसे अक्सर मातृभूमि के पर्याय के रूप में उपयोग किया जाता है, सीधे मृत सागर के दक्षिण में और पूर्व में एक पहाड़ी देश के साथ, रिफ्ट वैली डिप्रेशन के पूर्व में, जो जोड़ता है। मृत सागर और लाल सागर की अकाबा खाड़ी। प्रमुख शहर बोज़रा और शायद सेला थे, जिसका अर्थ है "निजी

चट्टान", कुछ लोग सोचते हैं कि यह पेट्रा शहर का संदर्भ है जो एडोमाइट क्षेत्र में एक प्रसिद्ध पुरातत्व स्थल है। एज़ियोनगेबर से, जो अकाबा की खाड़ी के बिल्कुल सिरे पर है, एक सड़क है जिसे किंग्स हाईवे कहा जाता है, जो एदोम के माध्यम से उत्तर की ओर जाती थी। यही वह मार्ग था जिस पर निर्गमन के समय मूसा इस्राएलियों का नेतृत्व करना चाहता था, लेकिन यदि आपको याद हो तो उस समय एदोमियों ने इस्राएलियों को जाने से मना कर दिया था और इसलिए उन्हें इधर-उधर जाना पड़ा। उस समय से, एदोमियों और इस्राएलियों के बीच संघर्ष होते रहे। मुझे लगता है कि यह उस विवाद का नतीजा है जिसे आप याकूब/एसाव विवाद कह सकते हैं यदि आपको वह पूरी स्थिति याद है जब इसहाक आदि से आशीर्वाद पाने के लिए दोनों भाइयों के बीच संघर्ष हुआ था।

अपने उद्धरणों के पृष्ठ 38 को देखें। केइल ने इस रिश्ते पर कुछ टिप्पणियाँ कीं और हम इसी के साथ अपनी बात समाप्त करेंगे। उन्होंने कहा, "गलत या हिंसा तब और भी अधिक निंदनीय है जब यह किसी भाई के खिलाफ किया जाए। जिस भाईचारे के रिश्ते में एदोम यहूदा के प्रति खड़ा था, उसे याकूब नाम से अभी भी अधिक स्पष्ट रूप से परिभाषित किया गया है, क्योंकि एसाव और याकूब जुड़वां भाई थे। यह चेतना कि इस्राएली उनके भाई थे, एदोमियों को उत्पीड़ित यहूदियों को सहायक सहायता प्रदान करने के लिए प्रेरित करना चाहिए था। इसके बजाय, उन्होंने न केवल भाई राष्ट्र के दुर्भाग्य पर अपमानजनक और घातक खुशी मनाई, बल्कि दुश्मन को सक्रिय समर्थन प्रदान करके इसे और भी बढ़ाने का प्रयास किया। एदोम का यह शत्रुतापूर्ण व्यवहार इस्राएल के चुनाव में ईर्ष्या से उत्पन्न हुआ, जैसे याकूब के लिए एसाव की नफरत, जो उसके वंशजों में प्रेषित हुई, और मूसा के समय के आसपास खुले तौर पर सामने आई, इस्राएलियों को अंदर जाने देने से भाईचारे से इनकार करने के कारण भूमि के माध्यम से एक शांतिपूर्ण तरीके से। दूसरी ओर, कानून में इस्राएलियों को हमेशा एदोम के प्रति मैत्रीपूर्ण और भाईचारे का रवैया बनाए रखने का आदेश दिया गया है।" व्यवस्थाविवरण 2:4-5 और 23:7 में उन्हें आदेश दिया गया है कि वे एदोमियों से घृणा न करें, क्योंकि वह उनका भाई है। तो आप उस जैकब/एसाव विवाद के

बारे में कह सकते हैं कि यह अभी भी चल रहा है, चाहे यह कोई भी तारीख हो...840...586
इत्यादि।

ठीक है, हम यहीं रुकेंगे और अगली बार सी से बात करेंगे, जो कि "सामग्री पर कुछ
टिप्पणियाँ" है।

ईसी के लिए सैमुअल विसलो द्वारा प्रतिलेखित
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा रफ संपादित
केटी एल्स द्वारा अंतिम संपादन
टेड हिल्डेब्रांट द्वारा पुनः सुनाया गया